Q3. नवनियतिवाद की अवधारणा की व्याख्या करें। ✗

→ आधुनिक भूगोल के विकास के प्रथम चरण में नियतिवाद एवं दूसरे चरण में संभववाद ने इस नवीन विषय को दो वर्गों में विभक्त कर दिया था। अर्थात इसके बीच द्वैतता का संकट उत्पन्न कर दिया। फलत: भूगोल के अस्तित्व पर संकट मंडराने लगा। इसी संकट को दूर करने के लिए नवनिश्चयवाद के सिद्धान्त का प्रतिपादन किया गया। इस प्रकार नव-निश्चयवाद एक नवीन भौगोलिक विचारधारा के रूप में अवतरित हुई, जिसका विकास क्रमश: नियतिवाद व संभववाद के बाद हुआ। अत: नवनिश्चयवाद को समझने से पूर्व नियतिवाद व संभववाद को समझना जरूरी है।

नियतिवाद या वातावरण निश्चयवाद के सिद्धान्त का जन्म और विकास जर्मनी में हुआ था। आधुनिक चिंतकों में जर्मन स्कूल के हम्बोल्ट तथा रिटर ने अपनी पुस्तक क्रमश: कॉस्मोस व अर्डकुन्डे में भूगोल को नियतिवाद के रूप में स्थापित किया। जिसके अन्तर्गत यह माना जाता है कि प्रकृति सर्वोपरी है तथा प्रकृति ही मनुष्य की कार्यशैली, जीवन, चिन्तन इत्यादि का निर्धारण करती है। इस प्रकार नियतिवाद में प्रकृति को अक्रियाशील कर्ता माना गया है, जिस पर भौतिक कारक क्रियाशील होते हैं, और उसकी मनोवृत्ति एवं निर्णय लेने की प्रक्रिया को निर्धारित करते हैं।

संभववाद शब्द का प्रथम प्रयोग फ्रांसिसी विद्वान फेवर ने किया था। परन्तु बाद के वर्षों में यह चिन्तन भूगोल की विषय वस्तु बन गई। इस शब्द का जन्म और विकास फ्रांस में हुआ। इस विचारधारा का जनक विडाल डी ला ब्लाश है। इस विचारधारा के

Scanned with CamScanner

अनुसार मनुष्य सर्वोपरी है तथा अपनी योग्यता के बल पर कुछ भी करने में समर्थ है, बशर्ते कि वह परिवर्तन के कार्य में क्रियाशील रहे। इस विचारधारा के अनुसार प्रकृति एक सलाहकार से ज्यादा कुछ नही है। मैकाइन्डर ने तो यहाँ तक लिख दिया कि, "मानव भूगोल ही वास्तविक भूगोल है।"

फलत: नियतिवाद व संभववाद के मध्य उत्पन्न द्वैतता के संकट से भूगोल को बचाने के लिए आस्ट्रेलियन भूगोलवेत्ता 'ग्रिफिथ टेलर' ने बीच का रास्ता निकाला और नवनिश्चयवाद जैसा सामंजस्य पूर्ण विचार प्रस्तुत किया। टेलर महोदय ने निश्चयवाद का संशोधन करके उसे stop and go determinism की संज्ञा दी है। इनके अनुसार मनुष्य न तो प्रकृति का दास है और न ही उसका स्वामि और न ही मानव की कार्य-क्षमता असीमित है। उन्होंने यह तर्क प्रस्तुत किया था कि आस्ट्रेलिया में कृषि अधिवास की सीमा भौतिक पर्यावरण के द्वारा निर्धारित कि गई है। जैसे वर्षा का वितरण आदि।

ग्रिफिथ टेलर ने अपनी बातों को स्पष्ट करते हुए बताया कि भूगोल प्रकृति व मानव के अन्तर्सम्बंधों का अध्ययन है। अत: ऐसी स्थिति में प्रकृति और मानव को ले कर कोई विवाद उत्पन्न करना ठिक नही है। उन्होंने कहा कि मनुष्य ने प्रकृति के ऊपर कई श्रेष्ठताएँ हासिल कर ली हैं। लेकिन अभी भी वह मरुस्थल को हरे-भरे खेतों में नही बदल पाया है। टेलर ने इस बात पर भी बल दिया है कि वातावरण के द्वारा किए जाने वाले प्रमुख नियंत्रण की उपेक्षा नही की जा सकती है। उसने प्रकृति एवं मानव की तुलना किसी महानगर के उस व्यस्त चौराहे पर खड़े यातायात प्रशिक्षु से किया है। जो वाहनो

Scanned with CamScanner

की गति तो बदल सकता है, परन्तु उनके लक्ष्य नहीं। टेलर ने एक और उदाहरण देते हुए कहा कि एवरेस्ट पर मानव विजय मानवीय श्रेष्ठता को दिखलाती है, परन्तु वहाँ चढाई के दौरान आक्सीजन का उपयोग प्रकृति की श्रेष्ठता प्रदर्शित करती है।

अतः टेलर महोदय ने सलाह दिया कि मानव को सबसे पहले रुक कर प्रकृति को समझना चाहिए और फिर अपनी योजनाओं को अंजाम देना चाहिए। प्रकृति को समझने का मतलब यह है कि मानव प्रकृति की सुन्दरता को क्षति न पहुँचाए वरना मानव स्वयं संकट में पड़ सकता है। जहाँ कहीं भी और जब भी मानव प्राकृतिक सीमाओं का उलंघन है या अतिक्रमण करता है तो प्रकृति तत्काल उसे सुनामि, कैटरीना, रीटा, भूकंप या विध्वंसक मौसमी परिवर्तन के रूप में अपने प्रभुत्व का अहसास करा देती है।

टेलर की विचारधारा को फेवर व ब्रुन्स ने पूर्णतः समर्थन दिया। ये दोनों भी टेलर की तरह समन्वयवादी विचारधारा के पोषक है। इनलोगों ने भी कहा कि मानव अपना कार्य कुछ सीमाओं के भितर ही करता है। वह अपने वातावरण में थोड़ा बहुत परिवर्तन कर सकता है, परन्तु उससे वो पूर्णतया छुटकारा नहीं पा सकता है। वहीं स्टार्क के मतानुसार मानव और प्राकृति में पारस्परिक सामंजस्य है न कि दोनों में शक्ति का प्रदर्शन या असहयोग।

मार्टिन की मान्यता है कि ज्यों-ज्यों हमारे भौतिक व जैविक ज्ञान में वृद्धि होती जाएगी त्यों-त्यों मानव तथा वातावरण के पारस्परिक संबन्धों को भलि भाँति समझने में सफलता मिलती जाएगी, इससे निश्चयवादी विचारधारा पुनः अधिकाधिक सफलता की

Scanned with CamScanner

ओर अग्रसर होगी।

अतः वैज्ञानिक विकास के बावजूद भी मनुष्य को प्रकृति के प्रति सहयोगपूर्ण रवैया अपनाना चाहिए। ग्रिफित टेलर ने इस संकल्पना को नवनियतिवाद कहा तथा इस अवधारणा का समाधान कई विद्वानों ने अलग-अलग नामों से किया है, जैसे O.H.K. SPATE ने इस विचारधारा को New Possiblism कहा है। कार्ल सावर ने इसे Present day Determinism की संज्ञा दी है तथा हटसन ने इसे वैज्ञानिक नियतिवाद की उपमा दी है।

निष्कर्ष :- अतः निष्कर्ष के रूप में हम कह सकते हैं कि वातावरण और मानव वर्ग के पारस्परिक सम्बंधों में वास्तविक सीमा का निर्धारण प्रकृति द्वारा होता है और मानव अपने प्रयत्नों व वातावरण के रूपान्तरण द्वारा प्रकृति से सामंजस्य स्थापित करता है। रसेल स्मिथ के शब्दों में, "मनुष्य केवल पृथ्वी का निवासी ही नहीं है, ब बल्कि वह एक सृजनकर्ता, भौगोलिक प्रतिनिधि तथा पृथ्वी को परिवर्तित करने वाला भी है।" इस दृष्टि से यह कहना असंगत न होगा कि मानव वातावरण के रूप में क्रियाशील एवं निष्क्रिय दोनों ही है। चूँकि मानव पृथ्वी पर रहता है और उस पर निर्भर भी करता है। अतः वह प्रकृति को सदैव उसकी आज्ञा मानकर ही जित सकता है (MAN CAN CONQUER NATURE BY OBEYING HER)

अतः मानव उन्नति के लिए यह आवश्यक है कि मनुष्य प्रकृति का सहयोग प्राप्त करे। इस विचार-धारा के अनुसार मनुष्य सर्वप्रथम रुक कर समझे तथा उसके बाद विकास की योजना निर्धारित करे या यूँ कहे कि इसमें बीच का मार्ग अपनाया गया है जो संभववाद

Scanned with CamScanner